Hl – तब यीशु जॉर्डन के पार वापस चला गया युहन्ना १०:४०-४२ | 1

– Save This Page as a PDF–

तब यीशु जॉर्डन के पार वापस चला गया

युहन्ना १०:४०-४२

जैसे-जैसे मसीह का मंत्रालय आगे बढ़ा, उसकी भेड़ों – उसकी अपनी – और अविश्वासी दुनिया के बीच आध्यात्मिक दूरी बढ़ती गई। जिस सत्य की उन्होंने स्वयं और अपने मिशन के बारे में घोषणा की वह चरवाहे की आवाज़ थी जो अपनी भेड़ों को अनुसरण करने के लिए बुला रही थी: इस सत्य ने न केवल उनके दुश्मनों की पहचान की, बल्कि, उन्हें हिंसा के लिए भी उकसाया। बाद में, मुख्य चरवाहा अपने शिष्यों को बताएगा कि उसका धर्मत्यागी धार्मिक अधिकारियों को सच्चाई से सामना करने का उद्देश्य उन्हें अपने पापों को पूरा करने का अवसर देना था (यूहन्ना १५:२२-२५)। जैसे ही समर्पण का पर्व समाप्त हुआ, यीशु दाऊद के पवित्र शहर से पीछे हट गये। उसे जॉर्डन के पार महत्वपूर्ण कार्य करना था। मसीह ने अपना मंत्रालय जारी रखा, प्रवृत्ति को उलटने की उम्मीद में नहीं, बल्कि अपनी ओर से बारहों को उनके मंत्रालय के बारे में सिखाने के लिए। अविश्वासियों के बीच विभाजन लगातार व्यापक होता गया, हालाँकि अभी तक टूटने की स्थिति तक नहीं पहुँचा है। ऐसा शीघ्र ही होगा।

यीशु के लिए, समय समाप्त हो रहा था, और वह यह जानता था। महान गैलीलियन अभियान समाप्त हो गया था, और यरूशलेम में धार्मिक अधिकारी उसकी हत्या करने का अवसर तलाश रहे थे। हेरोदेस एंटिपास ने अग्रदूत को मार डाला था (देखें Fl – युहन्ना बप्तिस्मा देनेबाला का सिर काट दिया गया), जिससे उसके शिष्यों को कोई नेता नहीं मिला। महासभा के धार्मिक नेताओं के विपरीत, उन्होंने अग्रदूत की भविष्यवाणियों की तुलना येशुआ के कार्यों से की और विश्वास के साथ प्रतिक्रिया व्यक्त की। इसलिए, येशुआ ने अपने अंतिम महीनों के दौरान पेरिया को सुसमाचार प्रचार करने के प्रयास में खुद को समर्पित कर दिया। पापियों का उद्धारकर्ता भाग नहीं रहा था; इसके विपरीत, वह खुद को अंतिम मुकाबले के लिए तैयार कर रहा था। एक बार फिर जॉर्डन यीशु और उसके कट्टर शत्रुओं के बीच बह गया।



फिर यीशु यरदन के पार पेरिया में वापस चला
गया, जहाँ यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला आरंभिक दिनों में बपतिस्मा देता था। यीशु जिस स्थान पर गए उसका सर्वाधिक महत्व है। वह उस स्थान पर गया जहाँ अग्रदूत ने उसे

Hl – तब यीशु जॉर्डन के पार वापस चला गया युहन्ना १०:४०-४२ | 2

बपतिस्मा दिया था। यहीं पर परमेश्वर की आवाज उसके पास आई और उसे आश्वासन दिया कि उसने सही निर्णय लिया है और वह सही रास्ते पर है। उस स्थान की तीर्थयात्रा करना अक्सर हमारी आत्मा के लिए बहुत अच्छा होता है जहां हमने पहली बार यहोवा पाया था। जब याकूब अपने जीवन के लिए हारान भाग गया क्योंकि उसे लगा कि एसाव उसे मार डालेगा, तो परमेश्वर ने उसे बेथेल में पाया (देखें उत्पत्ति एचडी – याकूब ने परमेश्वर के स्वर्गदूतों को चढ़ते और उतरते देखा)। और शकेम में अपनी अवज्ञा के विनाशकारी परिणामों के बाद, याकोव बेथेल वापस चला गया (देखें उत्पत्ति आईजी – बेथेल में याकूब का आध्यात्मिक नवीनीकरण)। जब याकूब को परमेश्वर की आवश्यकता हुई, तो वह उस स्थान पर वापस चला गया जहां पूर्व-अवतरित मसीहा ने उसे पाया था, इसलिए, धार्मिकता का पुत्र, अंत से पहले, उस स्थान पर वापस चला गया जहां शुरुआत हुई थी।

वहाँ वह रुका, और इस प्रान्त के आस-पास के भागों से बहुत से लोग उमड़कर उसके पास आये। युहन्ना बप्तिस्मा देनेबाला, भले ही मर चुका था, फिर भी लोगों के जीवन में प्रभाव डाल रहा था क्योंकि उन्हें उसकी गवाही याद थी। उन्होंने कहा: हालाँकि युहन्ना ने कभी कोई चिन्ह नहीं दिखाया, युहन्ना ने इस आदमी, येशुआ हा-मेशियाक के बारे में जो कुछ कहा, वह सच था। और फरीसी यहूदी धर्म की बुराइयों से विचलित हुए बिना, उस स्थान पर कई सरल दिमाग वाले, वफादार अनुयायी यीशु में विश्वास करते थे (यूहन्ना १०:४०-४२)। ये बप्तिजक के मरणोपरांत बच्चे थे। और इसलिए, वे सभी जो मसीह के लिए बोए गए हैं, जिन्होंने विश्वास में कड़ी मेहनत की है और आशा में आराम कर लिया है, हालांकि वे जमीन में दफन हो गए हैं, प्रभु की तुरही पर उगेंगे और अनन्त आनंद के लिए पक जाएंगे।